Indian J. Soc. & Pol. 10 (01) : 129-134: 2023 **ISSN : 2348-0084 (PRINT)**
First Published Online 31 JANUARY 2023 **ISSN: 2455-2127 (ONLINE)**

समाजवाद की अवधारणा

पंकज कुमार गौतम[1]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर,राजनीति विज्ञान विभाग, टी.डी. पी.जी.कॉलेज, जौनपुर उ.प्र, भारत

ABSTRACT

समाजवाद आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत में और विचारधाराओं के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो समाजवाद एक बहुचर्चित विषय रहा है मुझे जहां तक लगता है के आधुनिक समाज में सबसे ज्यादा पढ़ा जाने वाला सबसे ज्यादा सर्च किया जाने वाला सबसे ज्यादा समझने वाला और सबसे ज्यादा विवाद वाला अगर कोई अवधारणा रही है तो निश्चित रूप से वह समाजवाद रही होगी यही कारण है कि समाजवाद सर्वाधिक चर्चित और लोकप्रिय विचारधारा है। इसकी लोकप्रियता ने इसे भव्य और बहुआयामी बना दिया है। समाजवाद (Socialism) एक आर्थिक–सामाजिक दर्शन है। समाजवादी व्यवस्था में धन–सम्पत्ति का स्वामित्व और वितरण समाज के नियन्त्रण के अधीन रहते हैं। आर्थिक, सामाजिक और वैचारिक प्रत्यय के तौर पर समाजवाद निजी सम्पत्ति पर आधारित अधिकारों का विरोध करता है। उसकी एक बुनियादी प्रतिज्ञा यह भी है कि सम्पदा का उत्पादन और वितरण समाज या राज्य के हाथों में होना चाहिए।राजनीति के आधुनिक अर्थों में समाजवाद को पूँजीवाद या मुक्त बाजार के सिद्धांत के विपरीत देखा जाता है। एक राजनीतिक विचारधारा के रूप में समाजवाद युरोप में अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में उभरे उद्योगीकरण की अन्योन्यक्रिया में विकसित हुआ है। इसकी परिभाषा कोई एक नहीं हो सकते हैं स्कोर परिभाषित कर करना बहुत ही दुरूह कार्य है यह एक सिद्धांत के साथ साथ एक आंदोलन के रूप में होता है यह एक तरफ राजनीतिक विचारधारा है दूसरी तरफ आर्थिक विचारधारा भी है साथी एक संपूर्ण जीवन दर्शन है अर्थात समाजवाद सिर्फ एक विचार ना होकर जीवन जीने की कला या जीवन दर्शन के रूप में हमारे सामने लक्षित होता है।इस शोध पत्र में समाजवाद के इन्हीं पहलुओं पर विचार किया गया है।

KEYWORDS : *समाजवाद, कार्ल मार्क्स, लेनिन, वर्ग संघर्ष, अराजकतावाद*

समाजवाद 19वी शताब्दी की महत्वपूर्ण संकल्पना है जो पूंजीवाद उदारवाद व्यक्तिवाद के सिद्धांतों के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया है व्यक्तिवाद (व्यक्तियों को महत्वपूर्ण माना गया) उदारवाद में (व्यक्तियों के स्वतंत्रता को महत्वपूर्ण माना गया) और अराजकतावाद (राज्य को ही नकार दिया गया था व्यक्ति ही महत्वपूर्ण है) से व्यक्तियों के बहुआयामी स्वरूप की बात की गई तथा यह माना गया कि व्यक्ति के जीवन से संबंधित सभी व्यक्ति के द्वारा ही किया जाए अर्थात व्यक्ति के विकास में राज्य समाज का कोई योगदान नहीं होता है। समाजवाद आधुनिक विचारधारा तो है परंतु इसका स्वर बहुत पुराना है प्राचीन तथा मध्य काल के विद्वानों के विचारों में भी इसकी क्षाप प्रतिलक्षित होता है।प्लेटो की रिपब्लिक में संपत्ति एवं परिवार का साम्यवाद की चर्चा की गई है वही मध्यकाल में वर्जिल वाइक्लिफ तथा होरेसके विचारों में धार्मिक समाजवाद का उदाहरण मिलता है। आधुनिक काल में टॉमस मूर (1478 से 1535) की रचना यूटोपिया में तो ऐसी काल्पनिक राज्य का जिक्र होता है जिसमें सभी लोग अपनी क्षमता के अनुसार योगदान करेंगे और अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त करेंगे ऐसा दिखता प्रतीत होता है। अगर देखा जाए तो समाजवाद के अगले चरण अर्थात समाजवाद के विस्तार जिसे साम्यवाद कहा जाता है उसमें यही बात स्पष्ट हो जाती है व्यक्ति अपनी पूरी क्षमता से कार्य करेगा और अपनी आवश्यकता अनुसार प्राप्त करेगा। लेकिन एक विचारधारा के रूप में यह 19वीं शताब्दी में व्यक्तिवाद की प्रतिक्रिया स्वरूप आया है या यूं कहें कि वस्तुतः समाजवाद, पूंजीवाद में पनपी त्रुटियों के विरुद्ध प्रतिक्रिया है यह औद्योगिकीकरण से उत्पन्न हुए आर्थिक असमानता एवं बेरोजगारी के विरुद्ध आवाज है। राजनीतिक केंद्रीकरण के खिलाफ भी इसे स्वीकार किया जाता ह, समाज में वस्तुओं का उत्पादन एवं वितरण के मध्य सामंजस्य बैठाना ही समाजवाद है। प्रारंभिक चरण के समाजवादी विचारकों में नायल बावेफ(1714 से 1799), हेनरी सॉ सीमो, सेंट साइमन (1760 से 1824) चार्ल्स फोरियर (1772 से 1837) जैसे फ्रासिसी विचारक एवं रॉबर्ट ओवेन (1771 से 1858) जैसे अंग्रेज विचारक आते हैं। इसके अलावा भी चार्ल्स हॉल, विलियम थॉम्पसन, अल्बर्ट ब्रिसबेन, टॉम हॉक्सकिंग और चार्ल्स डेना आदि महत्वपूर्ण लोग शामिल हैं। प्रमुखतः प्रारंभिक समाजवादी, कल्पनालोकी समाजवाद की बात करते हैं। इन लोगों ने पूंजीवादी व्यवस्था के दोषों की बात कर उसे बदलने की बात तो करते हैं परंतु यह विचारक समाजवाद लाने के लिए कोई तार्किक रूपरेखा प्रस्तुत नहीं करते और ना ही उसकी व्यवहारिकता प्रदान करने का कोई उपाय बताया है। रावर्ट ओवन पहला ऐसा समाजवादी विचारक है जिसने समाजवाद शब्द का प्रयोग पहली बार किया, मजदूरों के लिए श्रम कार्यालय की स्थापना किया,(लेबर ब्यूरों) प्रथम श्रमिक कांग्रेस की अध्यक्षता की अमेरिका में एक न्यू हॉरमोनी(New hormony) नाम से एक बस्ती बसाई परंतु हर तरफ से असफल हो जाने पर वह भी कल्पनालोकी समाजवादी हो गया जो अन्य कल्पना लोकी समाजवादियों के भांति एक अच्छे समाज का पक्षधर तो था परंतु अच्छा समाज कैसे बनेगा इसका कोई उपाय नहीं सुझा पाया।

समाजवाद को वैज्ञानिकता प्रदान करना एवं आधुनिक विचारधाराओं में सर्वाधिक लोकप्रिय बनाने का श्रेय जर्मन दार्शनिक कार्ल मार्क्स(1818–1883) को जाता है मार्क्स ने समाजवाद को लाने का वैज्ञानिक तरीका भी बताया तथा पूंजीवादी व्यवस्था के दोषों को

1: Corresponding Author

वैज्ञानिकता की कसौटी पर प्रमाणित कर नए समाज का ढांचा भी प्रस्तुत किया। उसने अपने पूर्ववर्ती सभी विचारकों से अलग वैज्ञानिक व्याख्या एवं समाधान प्रस्तुत किया इसीलिए यह प्रमुख वैज्ञानिक माना जाता है इसने अपने मित्र फ्रेडरिक एंजिल्स के साथ मिलकर पूंजीवाद का ऐतिहासिक विकास की नई व्याख्या प्रस्तुत की कार्ल मार्क्स की प्रमुख रचना साम्यवादी घोषणा पत्र(कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो) और दास कैपिटल में तर्क एवं विज्ञान पर आधारित समाजवादी सिद्धांतों का प्रतिपादन किया, जिसका आधार पूर्णता भौतिक है कार्ल मार्क्स ने समाजवादी सिद्धांतों में क्रांति को महत्वपूर्ण माना है जो हिंसात्मक भी हो सकती है। इसके समाजवादी सिद्धांतों का उद्देश्य यह भी है कि दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ और वर्तमान व्यवस्था के खिलाफ क्रांति करो। मार्क्स के सिद्धांत का आधार द्वंद्वात्मक भौतिकवाद है इसी आधार पर इसने इतिहास की व्याख्या किया मार्क्स मानता है कि इतिहास गतिशील है हर युग में आर्थिक आधार पर ही सामाजिक व्यवस्था का निर्धारण निर्धारण होता आया है संपूर्ण मानव जाति का इतिहास वर्ग संघर्ष (क्लास स्ट्रगल) पर आधारित है समाज में सदैव दो विरोधी वर्ग ही रह सकते हैं या रहते हैं जिनमें संघर्ष चलता रहता है पूंजीवादी व्यवस्था में भी दो वर्ग है पहला पूंजीपति वर्ग और दूसरा मजदूर अर्थात सर्वहारा वर्ग इन दोनों वर्गों में संघर्ष के परिणाम पूंजीवाद के विनाश का कारण बनेगा और जो पूंजीवादी व्यवस्था का विनाश करेगा और समाजवादी व्यवस्था उसके फलस्वरुप स्थापित हो जाएगी।

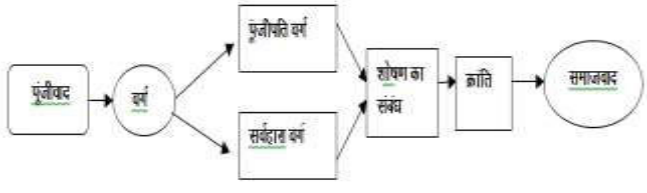

समाजवाद का अर्थ

समाजवाद आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत में और विचारधाराओं के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो समाजवाद एक बहुचर्चित विषय रहा है मुझे जहां तक लगता है के आधुनिक समाज में सबसे ज्यादा पढ़ा जाने वाला सबसे ज्यादा सर्च किया जाने वाला सबसे ज्यादा समझने वाला और सबसे ज्यादा विवाद वाला अगर कोई अवधारणा रही है तो निश्चित रूप से वह समाजवाद रही होगी यही कारण है कि समाजवाद सर्वाधिक चर्चित और लोकप्रिय विचारधारा है। इसकी परिभाषा कोई एक नहीं हो सकते हैं इसको परिभाषित करना बहुत ही दुरूह कार्य है अनेक विद्वानों ने इसे अपने–अपने ढंग से परिभाषित किया है यही विचारधारा के रूप में समाजवाद अनेक सिद्धांतों को अपने अंदर समाहित किया है जैसे अराजकतावाद श्रमिक संघवाद लोकतांत्रिक समाजवाद इसका प्रयोग एक सिद्धांत के साथ साथ एक आंदोलन के रूप में होता है यह एक तरफ राजनीतिक विचारधारा है दूसरी तरफ आर्थिक विचारधारा भी है साथी एक संपूर्ण जीवन दर्शन है अर्थात समाजवाद सिर्फ एक विचार ना होकर जीवन जीने की कला या जीवन दर्शन के रूप में हमारे सामने लक्षित होता है।

समाजवाद (socialism) शब्द का अर्थ समाजवाद शब्द सोशियससे बना है जिसका आशय है समाज, अर्थात समाजवाद का शाब्दिक अर्थ समाज को मुख्य मानने वाले विचार से है समाजवाद को किसी एक परिभाषा के अंतर्गत नहीं रख सकते समय के साथ–साथ इसका अलग–अलग अर्थों में प्रयोग किया जाता रहा है। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में समाजवाद को परिभाषित करते हुए लिखा है "समाजवाद वह नीति या सिद्धांत है जिसका लक्ष्य किसी केंद्रीय प्रजातांत्रिक शक्ति की कार्यवाही द्वारा अच्छे वितरण की व्यवस्था करना और उसी शक्ति की अधीनता में धन की उत्पत्ति की वर्तमान से अच्छी व्यवस्था करना है" (https://en.wikipedia.org/wiki/Henry_Hetherington)संभवत 1833 में प्रथम बार समाजवाद (Socialism) शब्द का प्रयोग (Poor man's Guardian) में हुआ हुआ था। (Ibid) 1835 में एक समाज सोसाइटी की स्थापना हुई थी जिसका नाम Association of all classes of all nation'sयह संस्था राबर्ट ओवेन की अध्यक्षता में स्थापित की गई थी।

समाजवाद दो क्रांतियों का फल है। एक क्रांति थी औद्योगिक क्रांति जो इंग्लैंड में 18वीं शताब्दी के अंत में पूर्ण हुई थी दूसरी क्रांति थी वैचारिक क्रांति का जिसका मुख्य केंद्र फ्रांस था। कार्ल मार्क्स ने मूलतः समाजवाद के लिए साम्यवादशब्द का प्रयोग किया। इस प्रकार यह कह सकते हैं कि समाजवाद का संबंध समाज के सुधार से है। आधुनिक समाज का संगठन इतना दोष और अन्यायपूर्ण है कि समाजवाद का अविर्भाव नितांत आवश्यक हो गया था। समाजवाद वस्तुतः उस सामाजिक अव्यवस्था का विरोधी है जिसको पूंजीवादी अर्थव्यवस्था ने पैदा किया है यह मनुष्यों के शोषण के विरुद्ध है परंतु यह समाज से परे मनुष्य के साथ नहीं खड़ा होता अपितु या मनुष्य को एक स्वतंत्र इकाई न मानकर संपूर्ण समाज को इसका अंग मानता है।

समाजवाद के मूल सिद्धांत

समाजवाद अथवा विकास समाजवाद चाहे इसे किसी भी नाम से जाने या पुकारे परंतु इसके कुछ मूलभूत सिद्धांत थे। जिनकी विशेषताएं निम्नलिखित हैं ।

समाजवाद पूंजीवाद का विरोधी समाजवाद के सभी प्रतिमान पूंजीवाद एवं पूंजीवादी प्रणाली के घोर विरोधी हैं क्योंकि समाजवाद के अनुसार पूंजीवाद असमानता और आम जनता के शोषण का यंत्र है और ऐसी व्यवस्था कभी भी सभी लोगों के कल्याण से संबंधित नहीं हो सकती है। समाजवाद उसी व्यवस्था से जनकल्याण की भावना विकसित करने के लिए उसको समाप्त कर नई व्यवस्था लागू करना चाहता है जिसमें राज्य एवं सरकार की भूमिका अहम होगी जो सभी व्यक्तियों का ध्यान रख सकेगी।

समाज की सर्वोच्चता

समाजवाद में व्यक्ति की अपेक्षा समाज को प्रमुख माना गया है क्योंकि पूंजीवाद व उदारवाद के समय माना गया था कि व्यक्ति एक स्वतंत्र इकाई होता है तथा वह अपना विकास स्वयं कर सकता है।जबकि समाजवाद व्यक्ति के विकास में केवल उसी का योगदान ना मानकर पूरे समाज का योगदान मानता है और मानता है कि समाज

के हित में ही व्यक्ति का हित समाहित है ना कि अकेले में। व्यक्ति ऐसा कुछभी नहीं कर सकता है जिसमें समाज की कोई भूमिका ही ना हो।

समानता पर आधारित संकल्पना

जहां पूंजीवाद में व्यक्ति की स्वतंत्रता को मुख्य तत्व माना गया है वहीं समाजवाद में समानता को मुख्य तत्व माना जाता है। यह समस्त समाज का हित साधना चाहता है इसलिए यह सामाजिक एवं आर्थिक समानता का प्रबल समर्थन करता है समाजवादियों की समानता की धारणा उदार वादियों की धारणा से भिन्न है जो केवल वैधानिक एवं राजनीतिक समानता से ही संतुष्ट हो जाते थे जिसे समाजवादी मात्र औपचारिक ही मानते हैं, जिसमें भौतिक स्रोतों व सामाजिक स्तर की व्यक्तिगत विषमताओं से मुक्त समाज में इसका कोई अर्थ नहीं है क्योंकि सामाजिक विषमताएं मानव कृत एवं अप्राकृतिक है। सभी मनुष्यों की आवश्यकता तथा प्राकृतिक समानता के प्रति विश्वास ही समाजवादियों के विश्वास का आधार है कि नई सामाजिक व्यवस्था में एक वर्गविहीन सामाजिक व्यवस्था की स्थापना होगी।

लोकतंत्र पर आधारित व्यवस्था

समाजवाद सर्वाधिकारवाद का विरोधी तथा लोकतंत्र का समर्थक है। समाजवादी सर्वाधिकारवादियों के सभी स्वरूपों का घोर विरोधी हैं क्योंकि इसमें व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता एवं व्यक्तित्वसब महत्वहीन होता है इसके विपरीत समाजवादी, लोकतंत्र का प्रबल समर्थन करते हैं तथा लोकतांत्रिक साधनों के माध्यम से समाजवाद लाने पर बल देते हैं समाजवाद, लोकतंत्र तथा समाज को अविभाज्य मानता है वस्तुतः लोकतंत्र समाजवाद का सार तत्व है डार्विन के शब्दों में लोकतांत्रिक प्रणाली समाजवाद का अंतर्निहित अंग है और उसे इससे पृथक नहीं किया जा सकता।(https://en.wikipedia.org/wiki/History_of_socialism)

अर्थव्यवस्था पर सामूहिक नियंत्रण

समाजवाद अर्थव्यवस्था पर सामूहिक नियंत्रणके माध्यम से सामाजिक कल्याण पर बल देता है। समाजवाद उत्पादन के साधनों को समाज अर्थात राज्य के अधीन करने का समर्थक है तथा उसकी यह भी मान्यता है कि उत्पादन के साधनों से उत्पादित वस्तुओं का वितरण भी राज्य/ समाज के माध्यम से ही व्यक्तियों के मध्य हो ।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हिमायती

समाजवाद मनुष्य की स्वतंत्रता का हिमायती है। लेकिन नकारात्मक स्वतंत्रता का नहीं अपितु सकारात्मक स्वतंत्रता का यह उदारवादियों के नकारात्मकता का विरोध करता है और समाज की व्यक्तिवादी धारणा को अस्वीकार करता है यह व्यक्तिवाद की तरह व्यक्तियों को स्वतंत्र इकाई नहीं मानता है।

सहयोग की भावना

चूकि समाजवाद समाज के स्वरूप पर आधारित अवधारणा है इसलिए यह सहयोग की भावना पर कार्य करता है। जबकि व्यक्तिवाद वह पूंजीवाद व्यक्तिगत प्रतियोगिता पर आधारित है। समाजवाद स्थानीय राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सहयोग स्थापित करने का पक्षधर है क्योंकि स्वतंत्र एवं खुली प्रतिस्पर्धा के गंभीर आर्थिक और सामाजिक परिणाम होते हैं जो निश्चित रूप से वैश्विक शांति के विपरीत होते हैं।

सेवा का आदर्श

समाजवाद सार्वजनिक भलाई अथवा सामान्य जन कल्याण के लिए सभी नागरिकों के समान उत्तरदायित्व पर बल देता है। यह कठोर भौतिकवाद तथा प्रतिष्ठित उदारवादियों के व्यक्तिवाद, दोनों का विरोध करता है। इसका मानना है कि समाज में लोगों के मध्य सेवा का भाव होना चाहिए तभी समाज की असमानता दूर किया जा सकता है साथ ही लोगों में बंधुता की भावना का विकास किया जा सकता है।

मूल आवश्यकताओं की पूर्ति

समाजवादियों का मानना है कि लाभ का स्थान, सेवा भावकी को प्रेरणा को लेनी चाहिए मूल्य, उपयोग से निर्णित होने चाहिए ना कि विनिमय की शर्तों से। वितरित किए जाने वाले सामानों का मापदंड या नहीं होना चाहिए कि वह कहां अधिकतम मूल्य प्राप्त कर सकेगा अपितु इससे होना चाहिए कि उसकी आवश्यकता कहां सर्वाधिक है।

समाजवाद, सामाजिक एवं आर्थिक समानता को राजनीतिक समानता के लिए आवश्यक मानता है। समाजवाद एक ऐसी अवधारणा है जो निश्चित रूप से समाज को ज्यादा महत्व प्रदान करता है क्योंकि यह मानता है कि व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास निश्चित रूप से स्वयं भी कर सकता है। लेकिन उसमें समाज के योगदान को झुठला नहीं सकता/ उसे अस्वीकार नहीं कर सकता।

पूंजीवादी विचारधारा का विरोधी समाजवादी विचारधारा के सभी प्रतिमान पूंजीवाद व पूंजीवादी प्रणाली के घोर विरोधी हैं समाजवाद के अनुसार पूंजीवाद समानता और आम जनता के शोषण का यंत्र है और ऐसी व्यवस्था कभी भी सभी लोगों के कल्याण से संबंधित नहीं हो सकती है।

कल्पनालोकी समाजवाद

सामाजिक चिंतन का वह तरीका जिसके अंतर्गत एक सर्वगुण संपन्न समाज (Perfect Socity) का प्रतिरूप model तैयार किया जाता है जिसमें किसी भी प्रकार की सामाजिक असमानता नहीं पाई जाती हो और अगर थोड़ी बहुत असमानता हो भी तो उसके समाधान का तरीका आदर्शवादी या काल्पनिक होती है। सर टॉमस मूर की पुस्तक **यूटोपिया (1516)** में ऐसे ही एक काल्पनिक द्वीप का वर्णन किया गया है जिसमें कहीं भी हिंसा (violence) उत्पीड़न (oppression) या संपत्ति(property) का कोई लक्षण नहीं दिखाई देता बल्कि सभी लोग मिल जुलकर निरंतर सुख शांतिमय जीवन बिताते हैं। ऐसे आदर्शवादी चित्रण की स्थिति यथार्थ में पृथ्वी पर पाया जाना अतिशयोक्ति प्रतीत होता है। इसलिए इस तरह के सिद्धांतों को मानने वाले लोगों को कल्पना लोकी कहा जाता है और इस तरह की

समाजवादी विचारधारा को कल्पना लोकी समाजवाद कहा जाता है।टॉमसमूर (1478–1535) फ्रांसिस बैकन (1561–1626) रॉबर्ट ओवेन (1771–1858) चार्ल्स फूरियर (1772–1837) सेंट साइमन (1760–1825) इसके प्रतिनिधि हैं।

मार्क्सवादी समाजवाद

इस तरह के समाजवाद की व्याख्या का श्रेय जर्मन विचारक कार्ल मार्क्स को जाता है उसके अनुसार विकास के एक निश्चित चरण में, समाज की भौतिक उत्पादक ताकतें उत्पादन के मौजूदा संबंधों के साथ टकराव में आ जाती हैं – या यह केवल कानूनी रूप में एक ही बात को व्यक्त करता है – जिस संपत्ति के ढांचे के भीतर उन्होंने काम किया है। फिर शुरू होता है सामाजिक क्रांति का युग। आर्थिक नींव में परिवर्तन जल्दी या बाद में पूरे अपार अधिरचना के परिवर्तन का नेतृत्व करते हैं।

बाद में इनकी सहायता करने वाला इनका मित्र फ्रेडरिक एंजेल्स का योगदान भी इसके विस्तार पर दिखाई देता है। इस प्रकार के समाजवाद में समाज की विषमता को समाप्त करने के लिए सुनियोजित तरीके से विषमता का विश्लेषण किया गया और साथ में उसके निदान हेतु उपयुक्त उपाय भी बताया गया । कार्ल मार्क्स एवं फ्रेडरिक एंजेल्स के प्रयास ने समाजवाद को वैज्ञानिक समाजवाद बना दिया। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के आधार पर इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या इन दोनों के द्वारा किया गया तथा वैज्ञानिक तरीके से समाजवाद को परिभाषित किया गया साथ ही यह बताया गया कि कैसे पूंजीवाद में ही उसके विनाश के तत्व छुपे हुए हैं। और अंत में उसी कारण उसका अंत होगा और समाजवादी समाज की स्थापना होगी।कार्ल मार्क्स(1818–1883) फ्रेडरिक एंजेल्स(1820–1895) लेनिन(1870–1924) स्टालिन(1878–1953) उसके प्रतिनिधि विचारक हैं।

श्रमिक संघवादी समाजवाद

श्रमिक संघवादीसमाजवाद इसके प्रमुख समर्थक फरनैंड (1881–1955) इमाइल पोजेंट (1860–1931), जार्ज सोरेल (1847–1922), ह्यूवर्ट लंगारडले (1874–1958) है। जिनका मानना है कि राज्य एक वर्ग राज्य है जिसका संचालन और नियंत्रण श्रमिक संघों द्वारा किया जाएगा या स्वतः यह संघ संचालन करते हैं। **श्रमिक संघ**वादियों को मध्य वर्ग के समाजवाद से घोर निराषा है। इनका मानना है कि समाजवाद उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करना चाहता है परंतु इनको इस बात का भय है कि राष्ट्रीयकरण के कारण नौकरशाही को बढ़ावा मिलेगा चूंकि राष्ट्रीयकरण के दौरान बहुतायत में अधिकारियों की आवश्यकता होगी जिसको श्रमिक संघवादी उचित नहीं मानते हैं। इनमें फरनैंड (1881–1955), इमाइल पोजेंट (1860–1931),जार्ज सोरेल(1847–1922),ह्यूवर्ट लंगारडले (1874–1958) प्रमुख हैं।

इनकी मुख्य बातें निम्न है।

- ये मजदूर आंदोलन का जन्मदाता है।
- मार्क्स के राजनीतिक कार्यक्रम को अस्वीकार करते हैं परंतु मार्क्स के द्वारा क्रांति के सिद्धांत को मानते हैं।
- इनका लक्ष्य संसार भर के मजदूरों को एकजुट कर एक सूत्र में बांधना और उनके दिल से राष्ट्रप्रेम को समाप्त करना है।
- राज्य के विरोध में है जो राज्य को शोषक वर्ग और मध्य वर्ग की संस्था मानते है।
- राजनीतिक दल से दूरी और राष्ट्रीय सीमा के बंधन से दूर रहने की वकालत करते हैं।
- यह सीधी लड़ाई में विश्वास करते हैं और राजनीतिक तरीकों से असहमति व्यक्त करते हैं।
- यह तोड़फोड़, हड़ताल, ध्वंसात्मक कार्यवाहियां,वहिष्कार, आदि उपायों की बात करते हैं।

नव श्रमिक संघवादी समाजवाद

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात श्रमिक संघ के सदस्यों ने राज्य विरोधी एवं सैनिक वाद विरोधी धारणाओं का त्याग कर समाजवादियों में सरकार के साथ इस आशय से मिल गए कि सफलतापूर्वक समाजवाद प्राप्त करने के लिए राज्य का सहयोग अपेक्षित है।

- इनका मानना है कि हिंसा के साथ सर्वहारावादियों का कोई नाता नहीं है।
- यह तो सब युगों की बुराइयों का एक शस्त्र मात्र है।
- इस विचारधारा को मानने वाले मुख्य विचारक जोहाक्स (Jauhaux) और पैरेट (Perrot) हैं।

श्रेणी समाजवाद या गिल्ड समाजवाद

गिल्ड का आशय व्यावसायिक श्रेणियां होती हैं इसमें मजदूर एवं प्रबंधक दोनों शामिल होते हैं इसका उदय ब्रिटेन में 1905 से 1925 के मध्य माना जाता है। इसके मुख्य प्रतिपादक आर्थरपेंटी(1875–1937) ऑरेंज(1873–1934) हॉब्सन (1870–1940) जी डी एच कोल(1889–1959) को माना जाता ह। गिल्ड समाजवादी प्रतिनिधित्व लोकतंत्र के आलोचक थे जो एक व्यक्ति एक वोट के सिद्धांत पर आधारित है इनका मुख्य कार्य व्यापार का नियंत्रण करना, मजदूरी का निर्धारण तथा श्रमिकों की समस्याओं को हल करना था। जी डी एच कोल का कथन है कि मुझसे इस बात का अनुरोध करना कि मैं किसी एक व्यक्ति को अपने समस्त समस्याओं का प्रतिनिधि बनाऊ मेरी बुद्धि का अपमान है। इस प्रकार के समाजवादियों में आर्थरपेंटी(1875–1937) ऑरेंज(1873–1934) हॉब्सन (1870–1940) जी डी एच कोल(1889–1959) प्रमुख हैं।

- गिल्ड मानते हैं कि लोकतंत्र में हितों का प्रतिनिधित्व होना चाहिए ना कि व्यक्ति का।
- इसलिए व्यवसायिक लोकतंत्र की धारणा में विश्वास करते हैं।
- यह राजनीतिक लोकतंत्र को समाप्त नहीं करना चाहते अपितु उसके स्थान पर आर्थिक लोकतंत्र को प्राथमिकता देना चाहते हैं।
- इनके अनुसार आर्थिक लोकतंत्र के बिना राजनीतिक लोकतंत्र का कोई अर्थ ही नहीं है।

- यह राज्य के कार्य को सीमित करना चाहते हैं या रखना चाहते हैं।
- यह राज्य के कार्य को आर्थिक क्षेत्र में इजाजत नहीं देते जैसा कि फेवियनवादी मानते हैं।

अराजकतावादी समाजवाद

इस सिद्धांत के अनुसार किसी भी रूप में अधिकार, षक्ति अनावश्यक एवं अनुचित है। राज्य भी अन्य समुदायों का प्रतिरूप है। अराजकतावादी स्वाधीनता को मुख्य मानते हैं इस पर किसी प्रकार के राज्य द्वारा हस्तक्षेप को नकारते हैं उनका मानना है कि राज्य और उसकी व्यवस्था किसी न किसी प्रकार स्वाधीनता को क्षति पहुंचाती हैं। क्योंकि यह व्यक्ति पर शक्ति पूर्वक नियंत्रण रखती है। नींद बाकू बाकुनिन Bakuninने लिखा है कि व्यक्ति की स्वतंत्रता का सार केवल यह है कि वह प्राकृतिक नियमों को प्राकृतिक माने,क्योंकि वह उन नियमों को प्राकितिक मानता है ना कि उन नियमों को इसलिए माने कि किसी अन्य व्यक्ति /सत्ता ने उन्हें मानने के लिए विवश किया है। अराजकतावादी मूलतः मार्क्स के अनुयायी थे और उन्होंने पूंजीवादी समाज के नष्ट एवं भूमि व पूंजी का स्वामित्व समुदाय को सौपने में मिलकर काम किया था। इस प्रकार के समाजवादियों में बुकानीन(1814–1876),प्रोंधा(1809–1865) क्राप्टकिन(1842–1921) गॉडविन में प्रमुख हैं।

विकासवादी समाजवाद

समाजवाद का व चिंतन जो समाजवाद को अचानक किसी कारण का परिणाम ना मानकर ऐतिहासिक विकास का परिणाम मानता है जैसा कि कार्ल मार्क्स नहीं मानता था। मानव समाज का इतिहास परस्पर वर्ग संघर्ष पर आधारित न होकर सहयोग का रहा है जैसा मार्क्स नहीं मानता था, इस मत का समर्थन मुख्यतः जर्मन विद्वान वर्नस्टीन (1850 से 1932) ने अपनी पुस्तक (विकासवादी समाजवाद, 1900) में प्रस्तुत करता है। वर्नस्टीन यह भी मानता है कि पूंजीवाद अपने अंत की ओर अग्रसर नहीं अपितु और मजबूती से खड़ा हो रहा है। जो मार्क्स नहीं मानता अर्थात विकासवादी समाजवाद मार्क्सवादी समाजवाद की अवहेलना करता है तथा उसके विरुद्ध अपनी प्रतिक्रिया देता है विकासवादी समाजवाद को ही संशोधन वादी समाजवाद भी कहा जाता है।

संशोधनवादी समाजवाद

19वीं शताब्दी के अंत में यूरोप में एक व्यावहारिक समाजवाद का उदय हुआ जिसे संशोधन वाद या पुनर्विचार वाद के नाम से जानते हैं। कार्ल मार्क्स के मृत्यु के पश्चात उसके समर्थक दो भागों में बट गए एक वे लोग जो कट्टर मार्क्सवादी थे दूसरे वह लोग जो समाजवाद को विकास एवं विधियों के माध्यम से लाना चाहते थे। संशोधनवाद का मुख्य प्रवक्ता बर्नस्टीन था जो स्वयं जर्मनी का था इसने अपनी पुस्तक ***इवोल्यूशनरी सोशलिज्म*** में मार्क्सवादी सिद्धांतों का विरोध करते हुए अपनी नई अवधारणा प्रस्तुत किया।

- मार्क्स के भौतिकवादी दृष्टिकोण का खंडन किया तथा कहा कि इतिहास केवल आर्थिक तत्वों से नहीं निर्धारित होता।
- मार्क्स के अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत का भी खंडन किया।
- पूंजी का संकेन्द्रण सिर्फ थोड़े लोगों के पास होता है इस धारणा का भी खंडन करता है।
- मध्यम वर्ग के लोप हो जाने वाली मार्क्स की धारणा को भी नहीं मानता है।
- मजदूर वर्ग के अधिनायत्व को भी नहीं स्वीकार करता है।
- मजदूरों की स्थिति में लगातार ह्रास होगा पर भी सहमत नहीं है।
- श्रमिकों का अपना कोई देश नहीं होगा यह भी नहीं मानता है।

फेबियनसमाजवाद

यह मध्यमवर्ग को ऐसा समुदाय मानता है जो नई व्यवस्था में प्रशासन कार्य हेतु उपयोगी होता है।फेबियन समाजवाद में फेबियन नाम रोम के फेवियल कंकटेटर नामक रोमन जनरल के नाम पर पड़ा है। जिसने युद्ध में क्रमिक एवं धीमी रणनीति का प्रयोग किया था इसका उद्देश्य था कि तुम्हें उचित क्षड़ के लिए अवश्य प्रतीक्षा करनी चाहिए और समय आने पर अपनी पूरी क्षमता से उस पर आक्रमण कर देनी चाहिए।1984 में फेबियन विचारक जॉर्ज बर्नार्ड शॉ, फेबियन समाजवाद का घोषणा पत्र जारी किया जिसमें उनके लक्ष्यों को देखा जा सकता है।

- फेबियन समाजवादी चाहते हैं कि समाज का पुनर्गठन हो समाज में यथाशीघ्र भूमि और संपत्ति पर एकाधिकार समाप्त हो तथा भूमि व पूंजी का अधिकार समाज को दिया जाए।
- फेबियन यह भी चाहते हैं कि समाज में विशेषाधिकार समाप्त हो तथा कोई भी भू–स्वामी समाज के लोगों से लगान न वसूल सके या न प्राप्त कर सके।
- इनके अनुसार समाज मूल्य का मुख्य स्रोत होता है ना कि श्रम जैसा कार्ल मार्क्स मानता है।
- अतः यह सामाजिक उपयोगिता में विश्वास करते हैं ना कि मूल्य के अतिरिक्त श्रम सिद्धांत में।
- इनका मानना है कि परिवर्तन लोकतांत्रिक स्वरूप व व्यक्तियों के सहमति से होना चाहिए।

समष्टिवादी समाजवाद

समष्टिवादी समाजवाद राज्य को निश्चयात्मक अच्छाई मानता है और सरकारी क्रियाशीलता पर बल देता है। इनके अनुसार राजनीतिक संस्थाओं में अनेक दोष पाए जाते हैं जिसके कारण संसार के अधिकांश व्यक्ति दुःखी हैं। और कुछ लोग ही सुखी हैं श्रीमती **बारबरा बूटन** जिस समष्टिवादी समाजवादकी बात कर रही हैं उसमें एका एक किसी क्रांति के फलस्वरूप परिवर्तन नहीं होगा बल्कि समाज का कायाकल्प शनैः शनैः होगा। समाज में शिक्षा एवं प्रचार द्वारा लोगों में समाजवादी चेतना जागृत करना होगा, उन्हीं प्रतिनिधियों को चुनकर संसद भेजना होगा जो समाजवादी मूल्यों को मानता हो। यह लोग विधान मंडलों में जाकर पूंजीवादी शोषण को रोकने हेतु प्रयास करेंगे जिससे पूंजीवादी व्यवस्था से आजादी दिला

सकेंग। इस तरह समष्टिवादी समाजवाद पूरे विश्व में आ सकता है। इस प्रकार के समाजवादियों में लिंडसे, बारबरा बूटन प्रमुख हैं।

यूरो साम्यवाद

1975 में एफ. बारबेरी (F.Barbeiry) ने सर्वप्रथम यूरो साम्यवाद शब्द का प्रयोग किया, 1976 में पश्चिमी यूरोप के सबसे बड़े तीन साम्यवादी दलों ने (इटली, स्पेन और फ्रांस) इस शब्द को मान्यता प्रदान की। इन्होंने घोषणा की कि वे राजनीतिक दलों की बहुलता एवं विविधता विरोधी विचारधारा युक्त दलों की कार्यप्रणाली, वहुसंख्यक एवं अल्पसंख्यक के मध्य राजनीतिक विकल्प, उदारवादी स्वतंत्रता की अवधारणा, आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक जीवन के निरंतर लोकतांत्रीकरण इत्यादि सिद्धांतों का समर्थन किया समग्रतः देखा जाए तो यूरो–साम्यवाद नेमार्क्सवादी समाजवाद की धारणा को त्याग कर संशोधनवादी, सुधारवादी, संविधानवादी, विकासवादी समाजवाद की विचारधारा का प्रचार प्रसार किया। इस प्रकार के समाजवादियों में एफ बारबेरी, सेंटियागो करीलो प्रमुख हैं।

REFERENCES

https://en.wikipedia.org/wiki/History_of_socialism

https://en.wikipedia.org/wiki/Henry_Hetherington, 'Progress of the Struggle of "Right Against Might"' in *Poor Man's Guardian*, 19 January 1833, pp. 17–18.

डर्बिन, ई एफ एम (2020) *दी पॉलिटिक्स आफ डेमोक्रेटिक सोशलिज्म,* नई दिल्ली, रूटलेज

बीर, मैक्स (2020) *ए हिस्ट्री आफ ब्रिटिश सोशलिज्म,* नई दिल्ली, रूटलेज